मेरी आत्मिक यात्रा

''चिरस्मरणीय क्षण''

चिरस्मरणीय क्षण हमारे जीवन में एक रोचक मोड़ लाते हैं। हमारे जीवन के आने वाले समय में हम इन क्षणों–निर्णयों घटनाओं, अनुभवों– को मुड़ कर देख सकते हैं व इसके मूल्य और इसकी ताज़गी को पुनः महसूस कर सकते हैं। यह एक ऐसे स्मारक के रूप में हमारी आत्मा में खड़े हो जाते हैं जिन्हें बार–बार याद करने से हमारे दर्शन और कार्य करने की क्षमता पुनर्स्थापित हो जाती है।

बौद्ध परंपरानुसार, सिद्धार्थ गौतम ने लगभग 29 वर्ष की आयु में ऐसे ही एक 'चिरस्मरणीय क्षण' का अकस्मात् सामना किया। आधुनिक विचारक इसे ''व्यक्तिगत रूपावलिक फेर बदल'' कहेंगे (अर्थात् व्यक्तिगत जीवन शैली और विचार में परिवर्तन जो सामूहिक बदलाव लाने की क्षमता रखती है) यद्यपि उनका जीवन राजकीय राजमहल तक ही सीमित था, वे 'बाहरी संसार' से सामंजस्य रखने का साहस रखते थे। पौराणिक कथा के अनुसार, इसके पश्चात् ही सिद्धार्थ ने एक ऐसा शीर्षक जिसे ''चतुर्थ दृष्टि'' कहकर संबोधित किया जाता रहा है देखा– एक बीमार व्यक्ति, एक वृद्ध पुरूष, एक मृतक शरीर और एक तपस्वी।

इसके पश्चात् वे और अधिक अपनी आत्मिक आँखें बंद कर अपने राजकीय बिछौने में नही रह सके। इस संसार में व्याप्त वेदना के प्रत्यदर्शी सिद्धार्थ विचलित हो उठे व अपनी स्वयं–सेवा की मानसिकता से बाहर निकल आए। परिणामस्वरूप, उत्तर पाने की तीव्र जिज्ञासा, जैसे लेखक विलियम बरो के शब्दों में, ''तीव्र मूल परिवर्तन का आधार'' बन गया।

राजमहल के राजकुमार ने एक अपरंपरागत मूलभूत निर्णय लिया। उन्होंने सारे ऐशो–आराम की जिंदगी, जिससे वे सुपरिचित थे, ठोकर मारकर उस सकरे मार्ग को अपनाया जो त्याग और बलिदान का प्रतीक था। इस स्वभाविक संसार में श्रेष्ठ बनने की इच्छा लिए, उन्होंने स्वयं को घोर तपस्या के अधीन कर दिया। इसके कई वर्षों के उपरांत, जब वे बोधी वृक्ष के नीचे तपस्या में लीन थे, उन्होंने यह दृढ़तापूर्ण घोषणा की कि उन्हें सर्वोच्च वास्तविकता का अनुभव हुआ है। उस क्षण में, जो उसके दर्शनशास्त्र के अनुसार सहमत हुए वे ''बुद्ध'' बने, अर्थात् वे ''जागृत करने वाले'', ''प्रज्जवलित करने वाले'' बने ।

यद्यपि हम बुद्ध के निष्कर्ष से सहमत न हो, तथापि हम में से अधिकांश लोग निश्चय ही उनसे अपनी तुलना कर सकते हैं– क्योंकि हम भी ऐसी ही निश्चित हृदय–स्पर्शी घटनाओं को जो हमारे जीवन के परिभाषित क्षणों के रूप में हैं, पृथक कर सकते हैं। मेरे कॉलेज के प्रारंभिक दिनों में, मुत्यु के कगार से होकर गुजरने का अनुभव, मेरे जीवन का 'केंद्रीय बिन्दू' बन गया।

उस दुखान्त रात, मुझे ऐसा लगा मानो मेरी आत्मा शरीर को छोड़कर बहुत ही भयानक व अंधकार की तराई से होकर जा रही है। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं बिलकुल भी तैयार नहीं हूँ। मैंने ऐसा सुना था कि जो अच्छी मृत्यु की आशा करते हैं, उन्हें पहले एक अच्छा जीवन यापन करना चाहिए। निश्चित रूप से मैं अच्छा जीवन व्यतीत नहीं कर रहा था, इसलिए मैं मरने के लिए भी तैयार नहीं था।

मेरी इस मानवीय दौड़ की अकड़ से अकस्मात् सामना कोई आनंददायक नहीं था। यद्यपि वह मेरे लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ। जो अनुभव मुझे नकारात्मक दिख रहा था, वह मेरे लिए सकारात्मक बन गया। क्योंकि इससे मैं मूल सिद्धांतों के साथ ऊभरकर निकला। मेरा पिछला जीवन मेरे लिए अब अधिक आकर्षक नहीं रहा। इसके विपरीत, वह मुझे अर्थहीन, स्वार्थी और व्यर्थ लगने लगा। सुख–विलास के अनुसरण ने मेरे हृदय को खोखला कर दिया था। अल्पकालीन लक्ष्य जो सब कुछ नष्ट कर रहा था, मुझे बिलकुल महत्त्वहीन लगने लगा।

स्नातक की प्राप्ति ? भविष्य का उद्देश्य ? आर्थिक स्थिरता की प्राप्ति ? ये सब किस काम का है– अगर मेरे निकट भविष्य में कहीं पर कब्र मेरा इंतज़ार कर रही हो ? वह आंतरिक आवाज कहीं मुझे झिड़क रही थी और सावधान कर रही थी उस तरह जिस तरह शेक्सपियर के नाटक ''हेमलेट'' में 'होरेशियो' के साथ हुआ था: *''ऐसी बहुत–सी चीजें स्वर्ग और पृथ्वी में हैं.....जिसका वर्णन तुम्हारे दर्शनशास्त्र में स्वप्न में भी संभव नहीं है।''*

एक अंधे व्यक्ति की तरह मैंने अंधकार में कुछ तत्वों को पकड़ते हुए ठोकर खाई। मैं स्वयं के द्वारा निर्मित सीमा से बाहर जाने के लिए अत्यधिक व्याकुल था और उत्तम उत्तर पाने के लिए व्याकुल हो उठा। एक बार फिर, इस उद्दण्डता का एहसास ''एक तीव्र मूल परिवर्तन का आधार'' बन गया।

धर्म में मुझे महत्त्वपूर्ण नवीनता नज़र आई। मेरा पालन–पोषण एक रोमन कैथलिक परिवार में हुआ था। मेरी जवानी के शुरूवाती दिनों में, मैं बहुत बड़ा भक्त था, पर यह विचार कि, केवल मसीहियत ही परमेश्वर तक पहुंचने का मार्ग है, दूसरे सभी धर्मों का निषेध, मुझे यह बहुत ही अनुचित व सकरी मानसिकता लगी। इसके अतिरिक्त, मैंने यह निश्चय किया कि, मैं ऐसी चीजों को और अधिक इसलिए नहीं अपनाऊंगा क्योंकि सिर्फ वे मेरी संस्कृति या परिवार की विचारधारा के भाग हैं। मैं उद्देश्यपूर्वक था कि, 'साफ और शुद्ध मन' और एक शुद्ध और निष्पक्ष प्रारंभिक बिन्दू से शुरूवात करूँ।

सुकरात ने कहा, ''एक अपरीक्षित जीवन जीने योग्य नहीं है'' मैंने भी यह दृढ़ निश्चय किया कि जो स्वयं परखा विश्वास न हो वह कुछ लाभ का नहीं .....मेरे व्यक्तिगत जीवन में भी इसी विचारधारा को रखते हुए, मैंने खुले हृदय से संसार में व्याप्त विभिन्न धर्मों की खोज करने की ठानी जिससे मैं ''सच्ची ज्योति'' को प्राप्त कर सकता था। यद्यपि मैं इस बात को पहचानता था कि मैं दूसरों के दैवीय ज्ञान, सिद्धांतों और विचारों को पढ़ रहा हूँ, लेकिन मेरा प्रमुख उद्देश्य परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से अनुभव करना था। मुझे यह विश्वास था कि कुछ न कुछ चीज, किसी स्थान पर मेरा मूलभूत सच्चाई से संबंध सिद्ध करेगी।

एलिजाबेथ बैरेट ब्रोविंग के शब्द मेरे उस समय की मानसिक स्थिति का अच्छा वर्णन करते हैं :

पृथ्वी का मिलन स्वर्ग से हुआ;
हरेक सामान्य झाड़ी भी परमेश्वर की आग से उज्वलित है;
पर केवल वे जो देखते हैं, अपने जूते निकालते हैं,
अन्य सभी एक आरामदायक स्थान के चारों ओर बैठकर बेर तोड़ रहे हैं।

'बेर के फल' मेरे लिए कोई महत्त्व नहीं रखते थे। किन्तु, मैं अपने 'जूते उतारने' और चीजों को दूसरे दृष्टिकोण से देखने के लिए तैय्यार था। निश्चित रूप से मैं अपनी 'जलती हुई झाड़ी' को खोज रहा था। यह सब मुझे निश्चय ही सही दिशा की ओर ले जा रहे थे। मैंने शायद ही यह अनुमान लगाया था कि अपने लक्ष्य को पाने से पहले मेरे जीवन में ऐसा विचित्र मोड़ आयेगा। पहली प्रमुख घटना जो इस रास्ते पर आई वह थी ....

दूरस्थ पूर्वी धर्मों से अकस्मात् सामना!

मैंने दूरस्थ पूर्वी धर्मों एवं उससे संबंधित विषयों पर बहुत सारे साहित्य पढ़ना प्रारंभ कर दिया। कई नये वाक्यांश मेरे मस्तिष्क में घुमने लगे– जैसेः योग, नक्षत्र मानचित्र, चक्र, मंत्र, तृतीय नेत्र, निर्वाण, ईश्वर–जागरूकता– ये सारी चीजें मुझे काफी आकर्षित और प्रफुल्लित करने लगी।

लगभग 1969 के अंतिम दिनों में, मैं योगी–भजन सुनने गयाः एक गुरू जो भारत से आए हुए थे, यह दावा कर रहे थे कि वे उत्तर–अमेरिका सहायता हेतु आए हैं कि, 'कोमल,' 'शांतिपरक' पीढ़ी स्वयं अपने आत्मिक मार्ग को ढूँढे। उन्होंने हमें योग के बारे में सिखाया (इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है ''बोझ उठाना'' जिसका अर्थ यह है कि भक्त का लक्ष्य ''ईश्वर के साथ बोझ उठाना'' है)। उन्होंने ये व्याख्या दी कि यह 'एकता' विभिन्न अर्थों से प्राप्त की जा सकती है, विशेषकर विस्तृत

ध्यान और मनन से। लंबी दाढ़ी, लंबे काले बाल और तीव्र आँखों वाले दूरस्थ पश्चिम रहस्यवाद के ये शिक्षक कुछ विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहे थे एवं थोड़ा–सा थोप रहे थे।

तथापि, उस विचित्र वातावरण और उस ऊँचे कद, सुडोल शरीर और पगड़ी बाँधे सिक्ख से मैं आकर्षित था। यह उसके द्वारा दिखाये विश्वास के प्रति वास्तविक उत्कण्ठा से बढ़कर थी। यह आत्मिकता के प्रति नये दृष्टिकोण से भरी उत्तेजना से बढ़कर था। यह वह प्रतिज्ञा थी कि, मैं स्वयं वास्तविकता में उस ईश्वर का अनुभव एवं स्वयं उस अलौकिक राज्य के अर्थ को समझ सकूँ। इसने मुझे योगी–भजन के शब्दों की ओर और उसके द्वारा दी गयी यौगिक अनुशासन की ओर आकर्षित किया (कुण्डलीनी योग, को 'योग की जागरूकता' भी कहा जाता है।)।

जल्द ही 'उच्च–आत्मज्ञान' को प्राप्त करना मेरे जीवन का प्रमुख केन्द्र बन गया। उसी बीच में एवं मेरे कॉलेज की कक्षाओं के बाद प्रत्येक उपलब्ध घंटे में, मैं 'आध्यात्मिक ज्ञान की पहुँच' के लक्ष्य की खोज में लग जाया करता था।

हिन्दू भक्ति कवि, सूरदास सावधान करते हैं ''ईश्वर भक्ति के बिना, आप अपने–आप को उस बासी टुकड़े के समान बनाओगे जो समय रूपी बाघ द्वारा खा लिया जायेगा।'' इस डर से कि कहीं मैं उस 'बासी रोटी' की तरह न बन जाऊं, मैंने यह निश्चय किया कि मैं समय का और बुद्धिमानी से उपयोग करूंगा। मैंने अन्य कॉलेज के मित्र के साथ, स्कूल छोड़ दिया ताकि मैं 'उस बाघ के जबड़े से बच सकूँ।'

मैं फ्लोरिडा प्रदेश विश्वविद्यालय जो कि तालाहस्से, फ्लोरिडा में स्थित है, से अपने सामान को समेटकर एक आश्रम के प्रारंभ करने के दृष्टिकोण से डेटोना तट (ऐसा स्थल जहां योग करने वाले एक साथ रहकर धार्मिक अनुशासन का पालन करते हैं) पर पहुंचा। यहां प्रतिदिन कई घंटों का मनन और मंत्र योग शामिल था (कुछ हिंदू शब्द और शब्दखंडों को जपने को मंत्र कहते हैं जिससे व्यक्ति उच्च स्तरीय विचार तक पहुंच सके)। हमने अपना कुछ समय हट योग के अध्ययन के लिए अलग किया। यह मूलतः शारीरिक व्यायाम (आसन) और श्वांस व्यायाम (प्राणायाम) पर केंद्रित था, दोनों व्यायाम जिसे 'चक्र' कहा जाता है (शरीर में ऊर्जा का आत्मिक केंद्र माना जाता है) पर आधारित थे।

हमारी दिनचर्या में ज्ञान योग (पवित्र पाठ और दूसरे धार्मिक लेखों का अध्ययन) भी शामिल था। मूलतः हमारा ध्यान व अध्ययन भगवत–गीता, वेद (प्राचीन हिन्दू ग्रंथ) और रहस्यमय लेख एवं विभिन्न शिक्षकों, जैसे ऐदगार केसी, हेलेना ब्लावात्सकी और योगानंदा के लेखों पर आधारित था। इसके अलावा, हफ्ते में कई रात योग कक्षाएं हुआ करती थी। हर घड़ी और हर कार्य, यहाँ तक की नहाना और भोजन करना, पूर्वनियोजित अनुशासन से चलता था। हम सभी आश्रम–भक्त के परम् उद्देश्य से प्रभावित थे– वह हमारी आत्मा का उस परमात्मा (ब्रह्म) से मिलना था। इसके लिए हम पूर्ण रूप से समर्पित थे।

मेरे साथ विचित्र बातें होने लगी : एक शांति का एहसास और इस संसार से अलगाव, मुझे ऐसा लग रहा था कि मानो कभी–कभी मैं अपने शरीर से अलग किसी प्रकार के उच्च स्थान का भ्रमण कर रहा हूँ, कुछ आत्मिक स्वप्न और दर्शन को देखने का अनुभव सा हो रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था मानों मैं उस घुटन भरे प्राकृतिक क्षेत्र से मुक्त हो रहा हूँ। प्रतिदिन मेरे अंदर एक तरह की आत्मिक लहर उठने लगी– एक धारणा कि मैं स्वयं से मुक्त हो रहा हूँ, जिसे मेरे शिक्षकों द्वारा 'माया' शब्द का प्रयोग किया जाता था अर्थात् वर्तमान संसार का मोह। मैं प्रोत्साहित हो उठा कि वह लोकातीत और श्रेष्ठ प्रेम मुझमें वास करेगा और मैं अपनी आत्मिक–निद्रा से जागृत होकर आदम के जैसे सूक्ष्म बोध को प्राप्त करके एक दिन अपने सृष्टिकर्ता के मुंख को स्वयं निहारता रहूँगा। इससे श्रेष्ठ क्या हो सकता था।

इसलिए मैंने दृढ़ निश्चिय किया। मैंने कड़े प्रयत्न से ईश्वर की खोज की,, यहाँ तक कि हर क्षण मेरा दिल उस पवित्र खोज के लिए धड़कता था। उस समय के मेरे दिल की पुकार को ''श्री रामकृष्ण के कथन'' से सर्वोच्च समझाया जा सकता है–

''मिट्टी के घड़े मे पानी भरकर टाँड (दीवार) में अलग से रख दिया जाये, तो कुछ दिनों बाद उसका पानी सूख जाएगा; पर यदि उसी घड़े को पानी से भरकर रखें, तो वह तब तक भरा रहेगा जब तक वह उसी स्थान पर है। ईश्वर के प्रति तुम्हारा प्रेम भी इसी समान है ..... यदि आप अपने हृदय को उस दिव्य प्रेम के सागर में डूबाकर रखोगे तो, तुम्हारा हृदय निश्चय ही सदैव भरा रहेगा जिससे दिव्य प्रेम का वह जल तुम्हारे अंदर से उमड़ता रहे।''

''भरकर उमड़ते रहना''..... भरपूर होना : यह मेरी स्वयं की आत्मिक आवश्यकता को व्यक्त कर रहा था। हर गुजरते हुए पल के साथ मैं परमेश्वर के साथ उस घनिष्ट संबंध को और मजबूत करने की चेष्टा करने लगा। पर उमड़ना : यह दूसरों की आत्मिक सच्चाई के प्रति प्यास की तृप्ति को दर्शाता है। यद्यपि मेरी प्रमुख और पहली इच्छा थी कि मैं स्वयं 'परिपूर्ण' हो जाऊँ, परंतु दिन–प्रतिदिन मैं दूसरों की झुलसने की अवस्था देखकर अत्यधिक व्याकुल हो रहा था। मुझे 'उमड़ने' की आवश्यकता थी। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इस तरह के एक निःस्वार्थ जीवन को ही 'उच्च

बुलाहट' कहा जाता होगा। अब मैं आत्मिक अज्ञानता में जकड़े मनुष्यजाति की दशा को अनदेखा नहीं कर सकता था। मैंने अपने अगुवों से सलाह लेने के पश्चात् शहर जाने हेतु आश्रम छोड़ दिया और मैंने स्वयं कक्षाएँ लेना प्रारंभ कर दिया।

अपने–आप से विवश होकर, मैंने फ्लोरिडा स्थित टेम्पा के उन्नतशील शहर की ओर प्रस्थान किया। उस क्षेत्र के चार विश्वविद्यालय (दक्षिण फ्लोरिडा का विश्वविद्यालय, टेम्पा का विश्वविद्यालय, फ्लोरिडा प्रेसिबिटेरियन और न्यू कॉलेज) ने मेरे लिए द्वार खोले, और मुझे अवसर प्रदान किया कि मैं अतिरिक्त पाठ्योत्तर क्रियाकलाप में अपनी कक्षाएँ ले सकूँ। काफी तादात में विद्यार्थी उपस्थित होने लगे। यह काफी तृप्तिपूर्ण अनुभव था। अपने 'स्पर्शित हृदय' से दूसरों के हृदय को स्पर्श करना, अपने परिवर्तित जीवन से दूसरों के जीवन को परिवर्तित करना– यह एक सच्ची आत्मिकता के उद्‌भव का चक्रीय क्रम था। अपने आपको पूर्ण रीति से समर्पित करने की इच्छा लिये, अनेक विद्यार्थियों ने आग्रह किया कि मैं एक अच्छे घर को किराये पर लूं और एक छोटे आश्रम का निर्माण करूं। आनंदपूर्वक, मैंने उसे पूरा भी किया।

उन्हीं दिनों, एक रात्री मैंने, जिसे कुछ लोग 'श्वेत ज्योति' से संबोधित करते हैं, का अनुभव किया। मुझे ऐसा ज्ञात हुआ मानो मेरी आत्मा मेरे शरीर से उठकर एक बहुत प्रबल और शाश्वत ज्योति की ओर खिंची चली जा रही है। यद्यपि, ये सारी घटनाएं जो उस समय मेरे साथ घटी थी, आज मेरे पास उसकी दूसरी व्याख्या है, परंतु उस समय मुझे ऐसा महसूस हुआ, मानो मैं एक उच्च श्रेणी के ध्यान अथवा मनन् से होकर गुजर रहा था। पहले से कहीं अधिक विश्वास के साथ कि, जिस 'पथ' पर मैं चल रहा हूँ वह सही है, मैंने अपना प्रयास और अधिक बढ़ा दिया।

और ऐसा हुआ ! अचानक से .....बिलकुल अनापेक्षित एक दैविक उपस्थिति ने मुझे बीच में रोका जो जीवन की भविष्यात्मक संरचना बन गई। यहाँ तक कि मैं एक नये निर्देशन की खोज भी नहीं कर रहा था, परंतु परमेश्वर मेरे हृदय को जानते थे। वे उसके प्रति मेरे प्रेम और उसके कार्य के प्रति मेरी ईमानदारी को भी जानते थे। इसलिए उन्होंने वाद्यकीय रूप में कुछ बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटना के द्वारा हस्तक्षेप किया जो लेकर आया .....

एक नाटकीय परिवर्तन!

इन्हीं कुछ सप्ताहों में कई महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटी, जिसने मेरे जीवन को एक 'महत्त्वपूर्ण मोड़' दिया। प्रथम मोड़ यह था कि, *टेम्पा ट्रीब्यून* समाचार पत्र ने करीब आधे–पृष्ठ का मेरा साक्षात्कार प्रकाशित किया। संवाददाता ने कुंडलीनी योगा के गुरू होने के नाते मेरे विश्वास के संबंध में अनेक प्रश्न पूछे और उस टेम्पा क्षेत्र मे मेरे द्वारा हो रहे कार्यों का विस्तृत लेख प्रकाशित किया। मैं इस अभिव्यक्तिकरण के लिए धन्यवादित था, क्योंकि इस मुफ्त प्रकाशन से निश्चय ही मेरी कक्षा में छोत्रों की वृद्धि होनी थी।

मुझे इस बात का आभास बहुत ही कम था कि यह घटना एक स्थानीय मसीही प्रार्थना समूह को मेरे लिए प्रार्थना शुरू करने हेतु सचेत भी कर देगी।

उस प्रार्थना समूह में से एक सदस्य ने इस लेख को समाचार पत्र से काटकर, अपने प्रार्थना–तख्ते पर लगा दिया और कुछ लोगों को प्रतिदिन उपवास और प्रार्थना करने के लिए नियुक्त किया जब तक कि मेरा परिवर्तन नहीं हो जाता। इसी दौरान मुझे मेरे कॉलेज के मित्र का पत्र प्राप्त हुआ। यह वही मित्र था जिसने ठीक उसी कारण से स्कूल छोड़ा था, जैसे मैंने। लैरी का खत पढ़कर मुझे काफी आश्चर्य हुआ। इसमे अपने जीवन में हाल ही में आये आकस्मिक परिवर्तन का वर्णन था। यद्यपि वह पूर्वी धर्मों और योग के अनुशासन के प्रति समर्पित था, लेकिन किसी चीज ने उसकी परमेश्वर तक संपूर्ण पहुंच को पूर्ण रीति से परिवर्तित कर दिया। लैरी ने वर्णन किया कि किस तरह उसने एक आशीषित और अलौकिक अनुभव यीशु से प्राप्त किया था जिसे ''पुनर्जन्म'' भी कहा जाता है।

लैरी ने यह दावा किया कि यह अनुभव हरेक अनुभव जो योग से प्राप्त हुआ था, से बिलकुल भिन्न था और इसने सिद्ध किया कि यीशु मसीह का अंगीकार ही उद्धार का एकमात्र मार्ग है। लैरी के शब्द स्पष्ट थे ''माईक, तुम योग और ध्यान के द्वारा कभी भी उस असीम शांति को पा नहीं सकते। तुम्हें क्रूस से होकर गुजरना होगा। तुम्हें नया जन्म लेना होगा। यीशु मसीह ही अनन्त जीवन का मार्ग है।''

मैंने अपने कॉलेज के मित्र को जवाब लिखा, जिसमें मैंने यह वर्णन किया कि मैं यह जानकर बहुत प्रसन्न हूँ कि तुम्हें सच्चाई 'मसीहियत के मार्ग' में प्राप्त हुई। परंतु, मैंने अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट कहा कि मैं मसीहियत के दावे को जो अनन्य हैं, मुझ से मेल नहीं खाते। मेरा विश्वास दुनिया के सभी धर्मों को समान लेकर चलना था। सभी धर्म उस एक ईश्वर की ओर जाने के विभिन्न 'पथ' हैं: यही मेरा दृढ़–विश्वास था। यह बहुत अद्‌भुत था कि, मैं लैरी के पत्र को अपने दिमाग से हटा नहीं पा रहा था। उसके शब्द मेरे अंदर लगातार गूंज रहे थे, यद्यपि उनके तर्कों ने मुझे बचाया था।

इसके कई सप्ताह पश्चात्, मैंने निर्णय लिया कि मुझे इस विवाधक (मुद्दे) का सामना करना ही होगा। मसीहियत को पूर्ण रीति से परखे बिना, उसकी दृढ़तापूर्वक कही बातों को नकारना अन्याय होगा– स्वयं मेरे लिए भी और उसके लिए भी जो इस संसार का उद्धारकर्ता होने का दावा करता है। मुझे ऐहसास हुआ कि मैंने वास्तव में यीशु मसीह को एक भी अवसर नहीं दिया कि वह स्वयं को सिद्ध करे। तब मैं इस निष्कर्ष में पहुँचा, ''यदि यह सच में वही है जिसका वह दावा करता है, और अगर मैं उसके उपदेशों को न परखूं तो जिस बात की मैं खोज कर रहा हूँ शायद उससे चूक सकता हूँ.....इसके अतिरिक्त, यदि यीशु मसीह मनुष्यजाति के उद्धार हेतु क्रूसित हुआ, तो मैं कम–से–कम उसकी सच्चाई के दावों की संभावनाओं हेतु अपने हृदय को खोल सकता हूँ।'' इसलिए एक सुबह, यद्यपि यह आंतरिक संघर्ष से भरा हुआ था, हर रोज की तरह योग करने के बजाय, मैंने निश्चय किया कि.....

एक दिन प्रभु यीशु मसीह में समर्पण करना है!

प्रतिदिन की तरह, मैं लगभग तीन बजकर पंद्रहर मिनट (3.15 ।ण्ड॰) पर उठा। वह हमारा आश्रम में सुबह उठने का सामान्य समय था। साढ़े तीन बजे से लगभग एक घंटा, हम अलग–अलग तरीके से व्यायाम व श्वांस लेने का अभ्यास करते थे। तब 4.30 से 6.30 तक हम पालती मारकर और बिना कोई क्रिया करे, 'कमल स्थिति,' में बैठकर विभिन्न प्रकार के ध्यान और मनन करते थे। अधिकतर हम मन्त्र योग का अभ्यास करते थे। उस सुबह, इन सभी कार्यों से हटकर कार्य करने का मैंने निर्णय लिया।

उद्देश्यपूर्ण तरीके से, मैं अपने कमरे में गया और शांत बैठ गया। और मैंने प्रार्थनापूर्वक निर्णय लिया कि उस मसीह यीशु जिसके बारे में 1तीमुथियुस 2:5 कहता है कि, वह ''परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक मध्यस्थ'' है जिसके बारे में लैरी ने दावा किया था। मैंने यह अंगीकार किया

कि, ''वह ही प्रभु है और उस दिन को, मैंने उसे समर्पित कर दिया; और यह कहा कि, यदि आप सत्य और जगत् के उद्धारकर्ता हैं तो आज अपने आपको मुझ पर प्रकट करें।'' उसके बाद मैंने बाइबल पढ़ना प्रारंभ कर दिया, मैंने सबसे अधिक समय यूहन्ना रचित सुसमाचार और प्रकाशित वाक्य में लौलीन होकर बिताया। मैं विशेषकर इस दूसरी किताब से, उसकी सामर्थशाली भविष्यसूचक कल्पनाओं से, विशेषकर उन आयतों, जिसमें अच्छाई और बुराई की शक्तियों के अंतिम संघर्ष जो इस्राएल के युद्ध क्षेत्र, जिसे अरमागेदोन (मैगीदो की घाटी) के नाम से पुकारा जाता है, से उत्तेजित हुआ।

जैसे मैंने पढ़ा, मैंने प्रार्थना करना आरंभ कर दिया। यद्यपि मैं पूर्णतः किसी सामर्थ, अलौकिक प्रगटीकरण (दर्शन, आवाज) के प्रारंभ होने की आशा कर रहा था, परंतु वह उस प्रकार नहीं हुआ। उस दिन लगभग दस घंटे लगातार बाइबल के अध्ययन और प्रभु यीशु को ढूढ़ने के बाद, उस क्षण जब मैं पीछे हटने वाला ही था और मसीह के दावों को निरस्त करने पर ही था, परमेश्वर प्रत्यक्ष हुआ और मैं अपने.....

लक्ष्य के निकट पहुंच गया!

कैन्त सुलीवन दक्षिण फ्लोरिडा विश्वविद्यालय में एक वरिष्ठ व्यक्ति थे। वे एक अच्छे विद्यार्थी थे, परंतु उनकी शैक्षणिक उपलब्धियाँ, उन्हें जिंदगी के उत्तर अथवा मन की शांति जिसकी वे इच्छा रखते थे नहीं दे सके। कुछ महीने पहले, वे दूरस्थ पूर्वी रहस्यवाद का अध्ययन कर रहे थे। मुख्यतः वे योगानंद जो एक प्रख्यात भारतीय गुरू थे, की शिक्षाओं का अनुसरण कर रहे थे, जो प्रचलित किताब *''योगी की आत्मकथा''* के लेखक भी थे। यद्यपि, अचानक ही कैन्त ने योग क्रिया से मसीहियत को अपना लिया था।

हालांकि, मैं कैन्त से व्यक्तिगत तौर से कभी नहीं मिला था, परंतु मैं उनके अनापेक्षित 'धर्मांतरण' से अच्छी तरह परिचित था। यह उन योग और ध्यान करने वालों के बीच 'वार्तालाप' का विषय था। हम सभी आश्चर्य कर रहे थे कि, ''वह यह कैसे कर सका ? वह टेम्पा क्षेत्र के सबसे अच्छे योग के शिष्यों में से एक शिष्य के रूप में जाने जाते थे। वह कैसे उन लोगों में शामिल हुआ जो यह शिक्षा देते थे कि केवल यीशु ही एकमात्र उद्धार का मार्ग है?'' न केवल हम कैन्त के 'विश्वास से अलगाव' पर अचंभित थे, परंतु हमारा यह मूल्यांकन था कि उसने बहुत ही छोटे अथवा घटिया मार्ग को अपनाया था। मैं यह सोचने लगा कि, एक व्यक्ति जो 'सभी धर्म एक हैं' की धारणा को रखता था, कैसे कभी उससे अलग हो सकता है ? किस चीज ने उसके मन को परिवर्तित कर दिया ?'' निश्चय ही, जैसे–जैसे मैं इन चीजों के बारे में सोचता गया, मैंने कभी नहीं सोचा कि.....

कैन्त उसी प्रार्थना समूह से जुड़ा था,
जो मेरे लिये प्रार्थना कर रहा था।

उस दैवीय निश्चित दिन, कैन्त ने अपने मैले कपड़े धोने का निश्चय किया था। उसके पास दो कक्षाओं के बीच ***एक घंटा (खाली) मुक्त था।*** यही सही समय था जब वे इस उभाऊ, पर अनिवार्य कार्य को कर सकते थे। जब वह हाथ–भर कपड़े लिये हुए थे जो उनके चेहरे तक पहुंच रहे थे, दरवाजे से आधे रास्ते पर ही थे, तब परमेश्वर की आत्मा ने उन्हें रोका। उन्होंने उस शांत और धीमी आवाज को अपनी आत्मा में महसूस किया कि, ''वहाँ मत जाओ। मेरे पास तुम्हारे लिए कुछ और कार्य है। अपनी वैन में बैठ जाओ और उस स्थान की ओर चलो जहाँ मैं तुम्हें ले जाऊंगा।''

ये सारी बातें अव्यवहारिक और तर्क विरूद्ध लग रही थी। इसके अलावा, नये मसीही होने के नाते, कैन्त के जीवन में कभी ऐसा अनुभव नहीं हुआ जब वे पवित्रात्मा द्वारा कोई भी कार्य करने से रोके गयें हों। उन्होंने परमेश्वर की योजना के अनुसार अपने–आपको समर्पित किया, उसने सोचा कि किसी कारणवश परमेश्वर नहीं चाहता कि वह उस दिन कपड़े धोंए। निश्चय ही, उसे कोई आभास नहीं था कि दो मील की दूरी पर.....

वह योग–शिक्षक जो कई सप्ताह से उनके प्रार्थना का विषय था,
कभी सहायता लेगा, ताकि वह उसके साथ गाड़ी पर दक्षिण फ्लोरिडा के
विश्वविद्यालय तक पहुंच सके।

हालांकि, मैंने पूरे एक दिन मसीहियत के दावों को समझने में अपना ध्यान केंद्रित किया था, मैं अपने रास्ते पर था कि उस दोपहर मैं योग की एक कक्षा लूंगा (क्योंकि मैंने अपनी अनावश्यक भौतिक संपत्ति का त्याग कर दिया था, जिसके कारण मुझे अधिकतर पैदल या किसी की सहायता से हर जगह पहुंचना पड़ता था)। जब मैं सड़क के किनारे खड़ा था, फिर भी मैं यह प्रार्थना कर रहा था कि यदि यीशु ही 'एकमात्र मार्ग' है तो वह किसी भी तरह अपने आपको प्रकट करेगा।

जैसे कैन्त वाहन चला रहे थे, परमेश्वर की आत्मा उसे कई विशेष मोड़ों को लेने में अगुवाई कर रही थी, जब तक वे उस मार्ग में नहीं आए जो बुश्क गार्डन के बाद वाली सड़क थी। वे अब भी आश्चर्य कर रहे थे कि वे यह सब क्यों कर रहें हैं? जब उसकी दृष्टि उस अद्वितीय, असामान्य जवान पुरूष पर पड़ी जो सहायता पाने हेतु सड़क किनारे हाथ दिखाये खड़े थे। अपने लंबे, घुंघराले, भूरे बाल, एक लंबी दाढ़ी और ढ़ीले भारतीय–किस्म का वस्त्र, निश्चित ही दर्शा रहा था कि मैं उन कुछ पश्चिमी लोगों में से हूँ जो दूरस्थ पूर्वी धर्मों के प्रति समर्पित है। कैन्त कभी भी किसी व्यक्ति को सहायता हेतु अपनी वैन पर नहीं बैठाते थे, परंतु उन्हें यह अनोखा अनुभव हुआ कि उन्हें कोई विवश कर रहा है। जैसे ही मैंने दरवाजा खोला और वैन पर चढ़ा, मेरा हृदय तेजी से धड़कने लगा, क्योंकि.....

कैन्त की वैन के ऊपरी छत पर
यीशु मसीह की बहुत बड़ी तस्वीर लगी हुई थी।

मैं यह समझ गया कि यह कोई संयोग नहीं था; मैं जानता था कि यह मेरी प्रार्थना का उत्तर है। मेरा मन और हृदय दोनो पूर्वानुमान से उत्तेजित हो उठे थे। कुछ शांत क्षणों के बाद, कैन्त चुप्पी तोड़ते हुए बोले कि, ''मित्र, क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूँ ?'' बिना संकोच के, मैंने प्रत्युत्तर दिया, ''हां!'' उसने तुरंत ही पूछा, ''क्या आपने कभी यीशु मसीह को अपने हृदय में महसूस किया है ?'' मैंने तुरंत उत्तर दिया, ''नहीं, किंतु मैं कब महसूस कर सकता हूँ ? मैं पूरे दिन इस अनुभव के लिए प्रार्थना कर रहा था।''

कैन्त का चेहरा आश्चर्यजनक दिखाई दे रहा था। निश्चित रूप से उसे मेरे इस तुरंत प्रत्युत्तर की अपेक्षा नहीं थी। उसने मुझे आमंत्रित किया कि, ''तुम हमारी आज रात की प्रार्थना सभा में आ सकते हो।'' मैंने उत्तर में कहा कि, ''मैं प्रार्थना सभा तक इंतजार नहीं करना चाहता। मैं दिन भर प्रार्थना कर रहा था। यदि यह परमेश्वर तक पहुंचने का सही तरीका है तो, मैं यीशु को अभी अनुभव करना चाहता हूँ।'' मेरे उत्साह को देखकर, कैन्त ने भीड़ से हटकर तुरंत पहले ही स्थान पर वैन खड़ी कर दी। वैन बंद करने के बाद, उसने मुझे अपने साथ वैन के फर्श पर बैठने के लिए आमंत्रित किया। सामने के बैठने की जगह के पर्दे को पीछे खींचते हुए ताकि हमारे पास एकांतता की स्थिति हो, उसने बहुत ही सावधानी से उद्धार के मार्ग के बारे में समझाना शुरू कर दिया। तब, उसी क्षण जब मैं मसीही उद्धार की मसीही दृष्टिकोण को अपनाने पर ही था, मेरी स्वयं की बुद्धि .....

एक बहुत बड़ी बाधा बन गयी !

एक विवश करने वाले विचार ने मेरे मन को जकड़ लिया था। यदि मैं इस प्रार्थना के समय का उचित उपयोग करना चाहता हूँ तो, मुझे सबसे पहले परेशान करने वाले सैद्धांतिक मुद्दों को सुलझाना पड़ेगा। एक के बाद एक, मैंने पारंपरिक बाइबलीय दृष्टिकोण जो मुझे उलझन में डालते थे सामने लाना प्रारंभ किया, परंतु हर एक प्रश्नों या समालोचनाओं के बाद कैन्त मुझे शांतिपूर्ण ढ़ंग से कहते रहे कि ''उसके बारे में चिंता मत करो, *बस यीशु को आज़माकर देखो !*'' जैसे मैंने महसूस किया कि मैं दूरस्थ पूर्वी विश्वास से पीछे नहीं हट सकता था, कैन्त निरंतर इस पर जोर देते रहे कि, ''तुम उन चीज़ों पर विचार मत करो, *बस यीशु को आज़माकर देखो !*''

स्वयं योग के प्रथम विद्यार्थी होने के कारण, कैन्त मेरी आशंका को समझ गये। मैंने जो अपने अंतःकरण में महसूस किया था इससे वे खुद को मुझ से रक्षात्मक रूप में जोड़ सके। उन्होंने अपनी अच्छी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन किया था। वे जानते थे कि यदि हमने अपने आपको सिद्धांतों पर और अधिक विचार–विमर्श में शामिल किया तो,सब मिलाकर मैं यीशु के अनुभव से अपने हृदय को बहुत दूर कर सकता था। इसलिए वे महत्त्वपूर्ण बातों पर निरंतर जोर देते रहे। यीशु के वचनों को दोहराते हुए, उन्होंने समझाया कि, ''यदि एक व्यक्ति नये सिरे से न जन्में तो वह परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता'' (यूहन्ना 3:3)।

कैन्त एक बात समझ गये थे कि, अब मैं बहुत ही पक्के तौर पर विस्वस्थ हूँ। किसी भी व्यक्ति को परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को समझने व देखने के लिए, आत्मिक पुनर्जन्म लेना आवश्यक है, क्योंकि यीशु ही ''सच्चाई'' है। एक बार जब वे एक व्यक्ति के हृदय में आ जाते है, वे उस व्यक्ति की पवित्र आत्मा के माध्यम से सभी सच्चाईयों की प्रक्रिया में अगुवाई करते हैं (देखें,यूहन्ना 14:6)। इसलिए एक खोजने वाले के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वह पहले यीशु की वास्तविक उपस्थिति को व्यक्तिगत तौर पर अनुभव करे। तब वे मसीहियत के इस केंद्रित विषय से घिरे हुए सभी संबंधित सच्चाइयों से, आसानी से परिचित हो सकते हैं।

अंत में कैन्त ने मुझे प्रोत्साहित किया। उसके तर्क इतने मजबूत थे कि उसने मुझे एक अज्ञात व्यक्ति की ओर प्रेरित कर दिया। इसके साथ–साथ, मैं परमेश्वर को जानने के लिए अत्यधिक भूखा था; कुछ क्षणों के लिए मैंने अपनी बुद्धि के सोच–विचारों को अपने से दूर कर दिया। बस ! मैंने एक याचना को दोहराना शुरू कर दिया जो बहुत ही सरल लग रही थी– किन्तु पुन:, मैं उसे अपनी इच्छा से करने की कोशिश कर रहा था। हमने अपने सिरों को झुकाया और इस नये मित्र ने मेरी उद्धार की प्रार्थना करने में अगुवाई की :

''प्रभु यीशु , मेरे हृदय में आइए। अपने लहू से मुझे धो दें। मेरे पापों को माफ़ करें। मुझे अनन्त जीवन दें। मुझे आपके प्रेम व उपस्थिति से भर दें। मैं अंगीकार करता हूँ कि आप समस्त संसार के पापों के लिए मारे और मृतकों में से जी उठे। अब मैं आपको अपने जीवन के प्रभु के रूप में ग्रहण करता हूँ।''

मैंने अपने हृदय की गहराईयों में एक गरमाहट को महसूस किया। कुछ अलग सा महसूस हो रहा था, जो किसी भी चीज से बहुत ही अलग था और जिसे मैंने कभी अनुभव नहीं किया था। जब मैं छोटा था, मैं विभिन्न कैथलिक कलीसियाओं में नियमित रूप से मिस्सा (प्रभु भोज) में सम्मिलित हुआ करता था। कुछ वर्षों तक एक वेदी के बालक के रूप में मैंने सेवा की और उनके विद्यालय में नियमित उपस्थित रहा। मेरे जीवन की उस प्रारंभिक अवस्था के दौरान रोमन कैथलिक सेविकाओं और याजकों ने जिन्होंने मुझे प्रभावित किया था उनकी नम्रता, निष्कपटता एवं समर्पण ने मुझे प्रोत्साहित किया।

किन्तु फिर भी, उन सभी वर्षों में–सभी अर्थपूर्ण मसीही परंपराओं और अनुष्ठानों के बावजूद–मेरा ऐसा वास्तविक सामना परमेश्वर से कभी नहीं हुआ।

प्रेरित पौलुस इस अनुभव को ''नए जन्म का स्नान और पवित्रात्मा का नवीनीकरण'' के रूप में पुकारता है (तीतुस 3:5)। हालांकि, अब तक कई प्रश्न मेरे हृदय में उठ रहे थे, पर वह आंतरिक 'आभास' के अंत में मेरा परमेश्वर के साथ सही संबंध पुनर्स्थापित हो चुका था, उसने मुझे प्रफुल्लित कर दिया। मैं निश्चित था कि यदि मैं मर भी गया तो, मैं स्वर्ग में अनंतकाल तक रहूंगा। परमेश्वर की अवर्णनीय शांति मेरी आत्मा पर ताजी ओस के समान छा गई थी। मैं परिवर्तित हो चुका था ..... और मैं वह जानता था।

वियतनामी बुद्ध धर्म को मानने वाले, टिच हत हान, लिखते हैं कि, ''यदि हम पवित्रात्मा को स्पर्श करते हैं तो, हम परमेश्वर को एक धारणा की तरह नहीं, अपितु एक जीवित सच्चाई की भांति स्पर्श करते हैं।'' एक योग के शिक्षक होने के कारण यह बात निश्चित ही मेरे मन:स्थिति में समाहित थी और आज तक मैं यही विश्वास करता हूँ। किसी भी तरह, अब मैं जानता हूँ कि 'अलौकिकता' का अनुभव करना, हमेशा यह जरूरी नहीं कि हम परमेश्वर का वास्तविक अनुभव करें। मैंने ईमानदारी से सोचा (बिलकुल यही टिच हत हान समझा करते होंगे) कि मैं अपने यौगिक अनुशासन के दौरान पवित्रात्मा की ''जीवित सच्चाई'' का अनुभव कर रहा था, परंतु नये सिरे से जन्म लेने के पश्चात्, मैंने इस अनुभविक ज्ञान को पूर्णत: एक नये दृष्टिकोण से देखा।

इस जीवन–परिवर्तन अनुभव के कई दिनों के उपरांत, मैंने अपने शिष्यों को यह सूचना दी कि अंतत: मेरा इस ''जीवित सच्चाई'' से सामना हो चुका है। मैंने यह अंगीकार किया कि मेरा मूलभूत अथवा परम् सत्य का प्रारंभिक मूल्यांकन गलत था, और जब तक मैं यीशु मसीह से

होकर नहीं गया तब तक मेरा सही परमेश्वर की आत्मा से कभी सामना नहीं हुआ था, और जिसके परिणामस्वरूप, मेरी योग की सभी कक्षाएँ निरस्त हुईं। यद्यपि ऐसे एक अचानक परिवर्तन ने मेरे शिष्यों को आश्चर्यचकित कर दिया था, फिर भी बहुतों ने मेरी इस नई विचारधारा पर भरोसा किया और पूरे उत्साह से यीशु मसीह को अपने जीवन के प्रभु के रूप में ग्रहण किया।

इसलिए हमेशा से, यह मेरा उत्साह रहा है कि मैं अपने अनुभव को दूसरों के साथ बांटू, जिसे मैंने बहुत ही जोश के साथ किया भी है। अपने सृजनहार को पाने में अत्यधिक कठिन संघर्ष था, परंतु एक बार उसे पाने के बाद, मैं यह अनिवार्य समझता था कि इस महत्त्वपूर्ण प्रकाशन को प्रत्येक सरल हृदय वाले व्यक्ति को बताऊं, जिनसे मैं मिलता था। आश्रम को बंद करके, मैं एक दूसरे स्थान में जा बसा। मैंने कई घंटे बाइबल अध्ययन और प्रार्थना करने में बिताए। व्यक्तिगत रूप से यह समय मेरे लिए बहुत ही लाभदायक था। यह एक ऐसा महत्त्वपूर्ण समय था जिसने मेरे जीवन में कठोर परिवर्तन, सही एवं गलत सिद्धांतों के बीच भिन्नता की परख को सिखाया। जैसे प्लेटो ने एक बार कहा था कि, "परमेश्वर सत्य है और ज्योति उसकी परछाई है।" अंततः स्वर्गीय परमेश्वर अपने व्यक्तिगत और अनुग्रहकारी प्रभाव से मुझ पर छा गया और प्रत्येक गुजरते दिन के साथ सत्य की ज्योति और भी तेजी से चमकने लगी।

भारत में, बहुत बड़ी भीड़ बाइबल के मत (जैसे यहाँ चित्रित सभा जिसे मैंने सिविकासी और बैंगलोर में संचालित किया था) को सुनने के लिए एकत्रित हुई। हिन्दू काफी सज्जन, बहुत ही प्यारे और आत्मिक सच्चाई के लिए अत्यधिक भूखें हैं। बहुत से लोग यीशु मसीह के पास आते हैं, विशेषकर जब वे इस बात को महसूस करते हैं कि पहले मेरा भी उनके समान एक ऐसा ही दृष्टिकोण था।